ऋणों से उऋण होने के सरल उपाय

उत्तरोत्तर ऋण का अधिभार तथा उससे त्रस्त होते जाना दरअसर जन्म-जन्मान्तरों से चले आ रहे तीन ऋणों अर्थात् देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण का ही परिणाम है। यह ऋण साये की तरह व्यक्ति के जीवन में निरंतर उनके पीछे लगे रहते हैं। शास्त्रों में भी इनके विषय में लिखा है -

'पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, मातृ देवो भव'।

इन ऋणों से उऋण होने का सबसे सरल बस एक ही उपाय है - प्रायश्चित्। यदि इस विषय पर गंभीरता से विचार नहीं किया जाता तो फलस्वरुप पूर्व के तथा पूर्वजों के दुष्कर्मों का परिणाम उनके वंशजों को जन्म-जन्मातर तक भोगना पड़ता है। यही पितृ ऋण है। कौवा इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। एक पौराणिक कथा सुनें, इससे उपाय कलेवर और भी अधिक रुचिकर बन जाएगा।

कौवा पूर्व में एकदम सफेद था, हंस की तरह। एक बार एक ऋषि ने अमृत की खोज में उसे दसों दिशाओं में जाने का आदेश दिया। यह भी चेतावनी दी कि अमृत का पता मात्र ही लगाए, उसे स्वयं न पी जाए। वर्षों तलाश के बाद अंततः कौवे को अमृत स्रोत मिल गया। परंतु उस तक पहुँचते-पहुँचते वह थक कर इतना पस्त हो गया था कि अपनी प्यास पर नियंत्रण नहीं रख पाया और ऋषि की चेतावनी भूल कर उस अमृत का पान कर बैठा। जब ऋषि को पता चला तो क्रोधित होकर उसने कौवे को शाप दिया कि तू काला हो जाएगा और अपनी ही पक्षी

जाति में सर्वथा तिरस्कृत रहेगा। तू स्वयं तो अभक्ष्य भोज्य पदार्थ ग्रहण करेगा ही परंतु तू सदा घृणा और तिरस्कार का पात्र रहेगा। मृत्यु के बाद तेरा मांस तक भी कोई भक्षण नहीं करेगा। क्योंकि तूने अमृत पान किया है इससे तू अमर अवश्य बन गया है। तेरी मृत्यु दुर्घटना से ही होगी। तू प्राकृतिक मृत्यु को नहीं भोग पाएगा।

इस घटना के कारण कागवंश कागवंशज बन गया। यह अकाट्य सत्य है कि कर्मों का फल प्रायश्चित् स्वरुप प्रत्येक के वंशजों को ही भोगना पड़ता है। मेरे वक्तव्य के अनेकानेक दृष्टांत आप अपने तथा अपने परिजनों के जीवन में अनुभव कर सकते हैं। वहॉ सब कुछ होते हुए भी कम से कम चित्त की शांति नहीं रहती, रोग-शोक आदि व्याधियों के साथ मन सदा उच्चाट रहता है। एक अनोखी सी घुटन सदैव वहॉ व्याप्त रहती है और लगता है कि जीवन में सब कुछ जैसे अवरुद्ध हो गया है। यदि ऐसी मनःस्थिति सामने आ रही हो तो आप मानलें कि कहीं कोई न कोई ऐसी बात अवश्य है जो जन्म-जन्मान्तरों से चली आ रही है और निदान स्वरुप उसका कहीं भी कोई प्रायश्चित नहीं हो सका है। निदान स्वरुप इसके लिए कुछ सरल से उपाय प्रस्तुत हैं। स्वयं करके देखें प्रभु अच्छा ही करेंगे।

वैसे तो यह उपाय पितृपक्ष के 15 दिनों के अंतराल में ही किया जाता है तथापि अपने जन्म नक्षत्र अथवा अमावस्या की किसी काल रात्रि में भी आप यह कर सकते हैं।

एक मिटट्री का घड़ा लें, इसके नीचे तली में पिन से इतना बड़ा छेद कर लें कि बूंद-बूंद जल इसमें से टपकता रहे। घड़े के मुॅह पर अपनी लंबाई के बराबर एक कच्चा सूत घड़ी की विपरीत दिशा अर्थात् दाएं से बाएं हाथ घुमाते हुए लपेट दें। इसको किसी एकांत स्थान पर लगे हुए बरगद अथवा पीपल के वृक्ष पर लटका कर उसमें पानी भर दें। यह वृक्ष सघन हो और किसी श्मशान में स्थित हो तो और भी अच्छा है। अच्छी तरह से देख लें कि घड़े में से पानी बूंद-बूंद करके ही नीचे गिर रहा है। यदि ऐसा नहीं है तो छेद में धागा अथवा दूब घास का टुकड़ा भी पानी के गिरने को संतुलित करने के लिए फंसा सकते हैं। इस वृक्ष के नीचे किसी थाली अथवा पत्तल में बूंदी के सात लडडू, सात गुड़ के टुकड़े, सात मावे की बर्फी, सात लौंग, अपनी मुटठी के परिमाण में काले तिल, काली उड़द की साबुत दाल, साबुत नमक तथा कोई भी सात पुष्प रख दें। वृक्ष की सात बार उलटी परिक्रमा करें। प्रत्येक परिक्रमा के मध्य अपने पितृजनों से प्रायश्चित स्वरुप क्षमा-याचना करते रहें कि कहीं जाने-अंजाने में कोई त्रुटी रह गयी हो तो कृपया क्षमा दान करें।

इसके बाद प्रायश्चित स्वरुप निम्न उपायों में से एक, दो अथवा अधिक नियम बना कर नियमित करते रहें। यह मान लें कि ऋण स्वरुप उपजे पापों का प्रायश्चित एक-दो बार में नहीं हो पाते इसलिए बस धर्म-कर्म कुछ भी समझकर श्रद्धा-भाव से करते अवश्य रहें।

1. अपने परिवार, कुटुंब के सदस्यों से जब कभी भी मिलना हो तो उनसे कुछ सिक्के लेकर रख लिया करें। जब लगे कि अपने कुटंब के लगभग सब सदस्यों से सिक्के जमा हो गये हैं तो अपनी श्रद्धा और आस्थानुसार इन्हें किसी सुपात्र को दान कर दिया करें। मन में यह भाव अवश्य बनाए रखें कि आप अपने पूर्वजों का कोई ऋण चुका रहे हैं।
2. कहीं धन संबंधी कार्य से निकलना हो तो साथ में तीन सिक्के लेकर निकला करें। रास्ते में देवस्थल, कोई नहर, नदी तथा श्मशान अवश्य मिलते हैं। इन तीनों स्थानों पर एक-एक सिक्का क्रमशः फेककर आगे बढ़ा करें। यह उपाय त्रिऋणों के प्रायश्चित स्वरुप करने पर बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है। आपकी यात्रा तो कम से कम अवश्य सुखद, सुरक्षित और फलदायक सिद्ध होगी।
3. बुधवार को बुध की होरा में एक पीली कौड़ी जलाकर राख कर लें। इस राख को कहीं बहते जल में विसर्जित कर दें।
4. जटा वाला नारियल अपने जन्म नक्षत्र के दिन कहीं बहते पानी में विसर्जित करें और दूर तक उसको बहता हुआ देखते रहें। भाव यह रखें कि आपका ऋण आपसे बहुत दूर जा रहा है और आपके कष्ट दूर हो रहे हैं।
5. समाज के सबसे तिरस्कृत वर्ग जैसे कोढ़ी, अपाहिज, किन्नर आदि को प्रसन्न करके उनकी शुभाशीष बटोरें।
6. अपने खाने के अंश में से कुत्ते तथा कौवे के निमित्त कुछ न कुछ अवश्य निकाला करें।
7. अपने खाने में से सर्वप्रथम गाय के लिए कुछ न कुछ अवश्य निकाला करें।

पितृ ऋण से उऋण होने में समाज का तिरस्कृत पक्षी वर्ग का कौवा बहुत ही प्रभावशाली सिद्ध हुआ है। ध्यान से देखें किसी एक बिरले कौवे में उसके काले परों में कहीं कोई एक सफेद रंग का एक पंख छिपा हुआ है। सौभाग्य से यदि वह सफेद पंख आपको मिल जाए तो इसको चावल से भरे हुए शंख में गाड़ कर अपने पूजा के स्थान पर रख लें। ऋणों से चमत्कारिक रुप से आप उबरने लगेंगे। जब चावल पुराने होने लगें तो शंख पुनः नये चावलों से भर लिया करें और पूर्व की भांति कौवे का पंख उसमें खड़ा कर दिया करें। यह बात अवश्य ध्यान में रखें कि कौवे को मार कर पंख लेने का प्रयास कभी न करें।

Gopal Raju